



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 29)

नई बिल्ली, रविवार, फरवरी 17, 1980/माघ 28, 1901

No. 29;

NEW DELHI, SUNDAY, FEBRUARY 17, 1980/MAGHA 28, 1901

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संलग्न हो जाते हैं कि यह असग संकलन के रूप में रखा जा सके।
Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

गृह संचालन

प्रधिकार

नई बिल्ली, 17 फरवरी, 1980

सांकेतिक 36 (ग्र).—राष्ट्रपति द्वारा जारी की गई निम्नलिखित उद्घोषणा संसाधारण के सूचनार्थ प्रकाशित की जा रही है:

यह मेरा भारत के गणराज्य, नीलगंगी संजीव रेखा का समाधान हो गया है कि ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई है जिसमें कि राजस्थान राज्य का शासन भारत के संविधान (जिसे इसमें इसके पश्चात् "संविधान" कहा गया है) के उपरान्धों के अनुसार नहीं लाला जा सकता है;

अब अब मैं, संविधान के अनुच्छेद 356 द्वारा प्रदत्त ग्रन्तियों का तथा उस निमित्त मुझे समर्थ बनाने वाली अन्य सभी शक्तियों का प्रयोग करते हुए एकद्वारा उद्घोषणा करता हूँ कि मैं—

(क) उक्त राज्य की सरकार के सभी कार्य प्रौढ़ और उम राज्य के राज्यपाल में नियुक्त या एकद्वारा प्रयोक्तव्य सभी शक्तियां, भारत के गणराज्य के रूप में अपने हाथ में लेता हूँ;

(ख) घोषित करता हूँ कि उक्त राज्य के विधान मण्डल की शक्तियां संसद् के प्राधिकार द्वारा या सभी शक्तियों का प्रयोग करता हूँगी; और

(ग) निम्नलिखित अनुरूपिक और पारिणामिक उपबन्ध बनता हूँ जो इस उद्घोषणा के उद्देश्यों को प्रभावी करने के लिए मुझे प्रावधारण या वांछनीय प्रतीक होते हैं, अर्थात्—

(1) इस उद्घोषणा के उपर्युक्त खण्ड (क) के आधार पर अपने हाथ में लिए गए हस्तों और शक्तियों का प्रयोग

करने में, मेरे लिए भारत के राष्ट्रपति के रूप में उम सीमा तक जिस तक मैं ठीक समझूँ उक्त राज्य के राज्यपाल के माध्यम से कार्य करना विषिष्ट होगा;

(ii) उस राज्य के सम्बन्ध में संविधान के निम्नलिखित उपबन्धों के प्रबन्धन को एकद्वारा नियमित किया जाता है, अर्थात्—

अनुच्छेद 3 के परन्तुक का उतना भाग जिसने का सम्बन्ध राष्ट्रपति द्वारा राज्य के विधान मण्डल को नियंत्रण करते हैं है;

अनुच्छेद 151 के खण्ड (2) का उतना भाग जिसने का सम्बन्ध सरकार के नियन्त्रक महासेवा परीक्षक द्वारा राज्यपाल को प्रसुत की गई रिपोर्ट के राज्य विधान मण्डल के समक्ष रखे जाने से है;

अनुच्छेद 163 और 164;

अनुच्छेद 166 के खण्ड (3) का उतना भाग जिसने का सम्बन्ध राज्य सरकार के कार्यों का मन्त्रियों के बीच भावंटन में है; अनुच्छेद 167 और अनुच्छेद 169 के खण्ड (1) का उतना भाग जिसने का सम्बन्ध राज्य की विधान सभा द्वारा संकलन के पारित किए जाने से है;

अनुच्छेद 174 का खण्ड (1) और खण्ड (3) का उपबन्ध (क); अनुच्छेद 175 से 178 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं); अनुच्छेद 179 का खण्ड (ख) और (ग) और उस अनुच्छेद का प्रथम परन्तुक और अनुच्छेद 180 और 181;

अनुच्छेद 186 का उनना भाग जिसने का सम्बन्ध विधान सभा के उपायकरण के संबंधमात्र और भूतों से है, अनुच्छेद 188, 189, 193, 194, 195 तथा 196, अनुच्छेद 198, प्रनृष्ठेद 194 का खण्ड (3) और खण्ड (4);

अनुच्छेद 202 के खण्ड (3) का उनना भाग जिसने का सम्बन्ध विधान सभा के उपायकरण के संबंधमात्र और भूतों से है; अनुच्छेद 208 से 211 तक (जिसमें यह दोनों सम्मिलित है); अनुच्छेद 213 के खण्ड (1) का परन्तुकृ और खण्ड (3) का परन्तुकृ; और

अनुच्छेद 323 के खण्ड (2) का उनना भाग जिसने का सम्बन्ध शासन समिति रिपोर्ट को राज्य के विधान मण्डल के समक्ष रखे आने से है;

- (iii) उनन राज्य की विधान सभा एतद्वयान विधान की जाती है;
- (iv) सविधान में गव्यपाल के प्रति किसी नियेश का अर्थ उस राज्य के सम्बन्ध में राष्ट्रपति के प्रति नियेश लगाया जाएगा और उसमें राज्य के विधान मंडल या विधान सभा के प्रति किसी नियेश का, जहां तक उसका सम्बन्ध उसके छत्तों और उसकी शक्तियों से है, अर्थ, जब तक कि सन्दर्भ में अन्यथा अपेक्षित न हो, समव् के प्रति नियेश लगाया जाएगा, और विधिष्टतया प्रनृष्ठेद 213 में गव्यपाल और गव्य विधान मण्डल या विधान सभा के प्रति नियेश का अर्थ क्रमशः राष्ट्रपति और समव् या उसके सदनों के प्रति नियेश लगाया जाएगा:

परन्तु इसमें की कोई बात अनुच्छेद 153, अनुच्छेद 155 से लेकर अनुच्छेद 159 तक (जिसमें ये दोनों भी सम्मिलित हैं) अनुच्छेद 299 और अनुच्छेद 361 तथा हितीय अनुसूची के पैग 1 से लेकर पैग 4 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं) के उपर्योगों पर प्रभाव नहीं छालेंगे और न गाढ़पति को इन खण्ड के उपर्योग (1) के अधीन उस सीमा तक जहां तक यह ठीक समझे, उनन राज्य के गव्यपाल के माझ्यम से कार्य करने से निवारित करेंगी;

- (v) सविधान में गव्य के विधान मण्डल के या एतद्वयान बनाए गए अधिनियमों या विधियों के प्रति किसी नियेश का ऐसे अर्थ लगाया जाएगा मानों उसके अन्तर्गत इस उद्घोषणा के प्राधार पर समद् द्वारा या राष्ट्रपति या सविधान के अनुच्छेद 357 के खण्ड (1) के उपर्योग (क) से नियिष्ट अन्य प्राधिकारी द्वारा राज्य के विधान मण्डल की अक्षियों का प्रयोग करते हुए भगाए गए अधिनियमों या विधियों के प्रति नियेश है, और गव्यस्थान साधारण खण्ड अधिनियम, 1955 (राजस्थान 1955 का अधिनियम 8), जिस रूप में गव्यस्थान राज्य में सारू है, और साधारण खण्ड अधिनियम, 1897 (1897 के 10वें) का उनना भाग जितना राज्य विधियों पर सारू है, ऐसे किसी अधिनियम या विधि के बारे में ऐसे प्रभावी होगा मानों यह उस राज्य के विधान मण्डल का अधिनियम हो।

नई दिल्ली;

17 फरवरी, 1980

नीलम संजीव चौहानी,
गाढ़पति

[सं. V/11013/4/80-सी.एम.आर]

नई दिल्ली;

17 फरवरी 1980

टी.सी.ए. श्रीमित्रावरदन, सचिव

MINISTRY OF HOME AFFARS

NOTIFICATION

New Delhi, the 17th February, 1980

G.S.R. 36(E)—The following Proclamation by the President is published for general information :

Whereas, I, Neelam Sanjiva Reddy, President of India, am satisfied that a situation has arisen in which the Government of Rajasthan cannot be carried on in accordance with the provisions of the Constitution of India (hereinafter referred to as "the Constitution");

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by article 356 of the Constitution and of all other powers enabling me in that behalf, I hereby proclaim that I—

- (a) assume to myself as President of India all functions of the Government of the said State and all powers vested in or exercisable by the Governor of that State;
- (b) declare that the powers of the Legislature of the said State shall be exercisable by or under the authority of Parliament; and
- (c) make the following incidental and consequential provisions which appear to me to be necessary or desirable for giving effect to the objects of this Proclamation, namely :—
 - (i) in the exercise of the functions and powers assumed to myself by virtue of clause (a) of this Proclamation as aforesaid, it shall be lawful for me as President of India to act to such extent as I think fit through the Governor of the said State;
 - (ii) the operation of the following provisions of the Constitution in relation to that State is hereby suspended, namely :—
 - so much of the proviso to article 3 as relates to the reference by the President to the Legislature of the State;
 - so much of clause (2) of article 151 as relates to the laying before the Legislature of the State of the report submitted to the Governor by the Comptroller and Auditor-General of India;
 - articles 163 and 164;
 - so much of clause (3) of article 166 as relates to the allocation among the Ministers of the business of the Government of the State;
 - article 167 and so much of clause (1) of article 169 as relates to the passing of a resolution by the Legislative Assembly of a State;
 - clause (1) and sub-clause (a) of clause (2) of article 174; articles 175 to 178 (both inclusive); clauses (b) and (c) of article 179 and the first proviso to that article and articles 180 and 181;
 - so much of article 186 as relates to the salaries and allowances of the Deputy Speaker of the Legislative Assembly; articles 188, 189, 193, 194, 195 and 196; article 198 and clauses (3) and (4) of article 199;
 - so much of clause (3) of article 202 as relates to the salaries and allowances of the Deputy Speaker of the Legislative Assembly; articles 208 to 211 (both inclusive); the proviso to clause (1) and the proviso to clause (3) of article 213; and
 - so much of clause (2) of article 323 as relates to the laying of the report with a memorandum before the Legislature of the State;
- (iii) the Legislative Assembly of the said State is hereby dissolved;
- (iv) any reference in the Constitution to the Governor shall in relation to the said State be construed as a reference to the President, and any reference

therein to the Legislature of the State or the Houses thereof shall, in so far as it relates to the functions and powers thereof, be construed, unless the context otherwise requires, as a reference to Parliament, and, in particular, the references in article 213 to the Governor and to the Legislature of the State or the House thereof shall be construed as references to the President and to Parliament or the Houses thereof respectively:

Provide that nothing herein shall affect the provisions of article 153, articles 155 to 159 (both inclusive), article 299 and article 361 and paragraphs 1 to 4 (both inclusive) of the Second Schedule or prevent the President from acting under sub-clause (i) of this clause to such extent as he thinks fit through the Governor of the said State;

(v) any reference in the Constitution to Acts or laws of or made by the Legislature of the State shall be construed as including a reference to Acts or laws made, in exercise of the powers of the Legislature of the State, by Parliament by virtue of this Proclamation, or by the President or other authority referred to in sub-clause (a) of clause (1) of article 357 of the Constitution, and the Rajasthan General Clauses Act, 1955 (Rajasthan Act 8 of 1955), as in force in the State of Rajasthan, and so much of the General Clauses Act, 1897 (10 of 1897), as applies to State laws, shall have effect in relation to any such Act or law as if it were an Act of the Legislature of the State.

New Delhi;
The 17th February, 1980.

NEELAM SANJIVA REDDY,
President.

[No. V/11013/4/80-CSR]

New Delhi; T. C. A. SRINIVASAVARADAN, Secy.
The 17th February, 1980.

ग्राहक

नई विल्सो, 17 फरवरी, 1980

सा०का०वि० 37 (अ).—गोपनीय द्वारा जारी किया गया मिम्मलिखित
ग्राहक संविधानसभा के सुचनाएँ प्रकाशित किया जा रहा है।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 356 के अधीन मेरे द्वारा भाज
फरवरी, 1980 के 17वें दिन जारी की गई उद्घोषणा के बारे (ग)

के उपलब्ध (1) का अनुसारण करते हुए मैं एतद्वारा निर्देश देता हूँ कि राजस्थान राज्य सरकार के सभी कृत्य और संविधान के अधीन या उस राज्य में प्रदूत किसी विधि के अधीन उस राज्य के राज्यपाल में निहिन या प्रयोगनाम सभी शक्तियाँ, जिनको गोपनीय ने उक्त उद्घोषणा के बारे (क) के प्राधार पर अपने हाथ में ले लिया है, राष्ट्रपति के प्रधोक्षण, निरेशन और सियाल्कण के अधीन रहते हुए, उक्त राज्य के राज्यपाल द्वारा भी प्रयोगनाम होंगी।

नई विल्सो;
17 फरवरी, 1980

मीलम उंडीय रेड्डी,
राष्ट्रपति

[स० V/11013/4/80-सी एस आर]

नई विल्सो;
17 फरवरी, 1980

टी० सी० ए० श्रीनिवासवरदन, सचिव

ORDER

New Delhi, the 17th February, 1980

G.S.R. 37(E).—The following Order by the President is published for general information:

In pursuance of sub-clause (i) of clause (c) of the Proclamation issued on this the 17th day of February, 1980, by me under article 356 of the Constitution of India, I hereby direct that all the functions of the Government of the State of Rajasthan and all the powers vested in or exercisable by the Governor of that State under the Constitution or under any law in force in that State, which have been assumed by the President by virtue of clause (a) of the said Proclamation, shall, subject to the superintendence, direction and control of the President, be exercisable also by the Governor of the said State.

New Delhi;
The 17th February, 1980.

NEELAM SANJIVA REDDY,
President.

[No. V/11013/4/80-CSR]

New Delhi; T. C. A. SRINIVASAVARADAN, Secy.
The 17th February, 1980.

